।। मूळ ज्ञान को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ मूळ ज्ञान को अंग लिखंते ||

|| सवैयो इंद व छंद ||

कहोजी जीव प्रालब्ध केसे || थित बंधे सोई बात बतावो ||
आव की मेर बंधे धम मोवण || तन कूं छाड केसी बिध जावो ||
सुभ सो होय असुभ अने का || कौन धनि तुज कोन कहावे ||
सोच विचार कहे सुखदेवजी || ग्यानी हुवे सोई भेद बतावे || १ ||

इस जीव का प्रारब्ध कैसे बना व संचित कर्म कैसे बंधे इसकी सारी बात मुझे बताओ वायु याने स्वाँस की मर्यादा और उम्र कैसे बाँधे गये । उम्र की याने स्वाँस पूरी हो जाने पर स्वाँस शरीर को छोडकर किस तरह से जाता है?इस जीव से अनेक शुभ और अशुभ कर्म होते है वे कैसे लिखे जाते है । इस जीवका धनी(मालिक)कौन है?तुम्हे क्या कहते है?आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज विचार करके कहते है,कि कोई सतस्वरुप ज्ञानी होगा,वही इन बातो का भेद बतायेगा । || १ ||

सुणोजी जीव प्रालब्ध अेसे || हाथ करी सब सीस लिखीजे ||
आवं मरजाद सब तन पाछे || घूम कुं सोझ प्रवाण लिखीजे ||
कीया सो देह दिया सब आपे || खूट गया ततकाल सिधाया ||
सोच बिचार कहे सुखदेवजी || जीव के नाह धणी सिर भाया || २ ||

सुनो,जीव का प्रारब्ध इस तरह से बनता है जीव जो-जो कर्म अपने हाथो से करता है । वे-वे सभी कर्म जीवो के सिर पर लिखे जाते है । जीव देहसे वे स्वयं देह और वे सभी कर्म स्वयं ही अपने मन से दे देता है । स्वाँस समाप्त होते ही जीव तत्काल देह त्याग देता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इस जीव के उपर मालिक कोई नही है । यह जीव अपने किए गये कर्मो के प्रमाण से भोग भोगता है । जीवो के उपर दुजा कोई मालिक नही है ||२||

जुग की गत्त कहो सब मोई || कौन हे जीव उपावन हारा ||
सुख सो दुख सबे बिष झेला || पार सो ब्रम्ह कहे सब न्यारा ||
तार न मार नहिं गत्त ओपत || सुन्न सरूपत बैंत बिचारा ||
सोच बिचार कहे सुखदेवजी || सो जीव किणे बस डोल न हारा || ३ ||

इस जगत की सारी गत मुझे बताओ और जीव को उत्पन्न करने वाला कौन है । वह मुझे बताओ । सुख और दु:ख और सब विषय विकारोके तरंग इन सबसे सतस्वरुप पारब्रम्ह अलग है । ऐसा सब कहते है वह सतस्वरुपी पारब्रम्ह किसी को मारता भी नही है किसी की गती भी नही करता है । वह तो सुन्न स्वरूपी है । बैत( )विचार । यह जीव किसके वश संसार मे डोलता है इसका विचार करके बताता हूँ । आदि ऐसा सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ||३||

सुन्न मे आद आकाश बंध्यो ।। जुं ताहि के झोकत पावन चाली ।।
वाय सुं तेज पडो कण तोय ।। मही जुं दूध थरकण खाली ।।
पाँच सो तत्त बण्यो जुग अेसे ।। जीव अनंत उपना हे माली ।।
सोच बिचार कहे सुखदेवजी ।। मूळ निध्यान साखा इम चाली ।। ४ ।।

इस सुन्न मे सर्व प्रथम आकाश बाँधा गया । उस आकाश के झोके से वायु उत्पन्न हुयी । वायु से अग्नी और अग्नी से तोय(पानी)और उस पानी मे पृथ्वी जैसे दूध के उपर थरकन जमती है इस प्रकार से पानी के उपर पृथ्वी बनी । ये पाँच तत्व संसार मे इस प्रकार से बने । और संसार मे जीव अनन्त उत्पन्न हुए । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज विचार करके कहते है, कि सर्व प्रथम मूल निधान इस प्रकार बना फिर उस मुळका,मुळका पेड होके ,डाल डालीया ऐसी चली । ।। ४ ।।

राकस भूत सबे सिध साधक ।। पेलीसो लोयक देव बण्या हे ।।
नर सो नार गुरू सुण चेला ।। पेल पढया कन बेद गुण्या हे ।।
राव सो रंक बले सुण भूपत ।। पेल सो हाक क कान सुण्यो हे ।।
सोच बिचार कहे सुखदेवजी ।। जीव मे पेलि को कौन बण्यो हे ।। ५ ।।

प्रश्न:–राक्षस,भूत,सब सिद्ध और साधक इनमे से सर्व प्रथम कौन बने । सर्व प्रथम मनुष्य बने या पहले देव बने । पहले शिष्य बना व पहले वेद सीखे या वेद गुणे । सर्व प्रथम राव पैदा हुए तथा रयत पहिले पैदा हुयी । या पहले राजा पैदा हुआ । पहले हाक मारा या हाक लगाने से पहले ही हाक कान ने सुना । इन जीवो मे सर्व प्रथम कौन बना उसका विचार करके बताओ । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ५ ।।

रेत से पेल पछे दुज दानव ।। नर के पेलस नार बणी हे ।।
पेलस हाक सुणे जुग लारे ।। करणी काम से होय धनी हे ।।
सिष तो सुत्त गुणे पढ पेला ।। ततां पछे मंड अेम बणी हे ।।
सोच बिचार कहे सुखदेवजी ।। सुण सरूपत आद धणी हे ।। ६ ।।

उत्तर:–सर्व प्रथम प्रजा बनी । देव और राक्षस ये बाद मे बने । पुरूषो से पहले स्त्री बनी । पहले हाँक लगाने वाला हाक लगाता है फिर बाद मे संसार मे हाँक कानो से सुनाई देती है । करणी और काम के प्रमाण से ध्वनी होती है । शिष्य और बच्चे गुनने के पहले सीखते है व सीखकर गुनते है और यह सृष्टि पाँच तत्वो के उपजने के बाद बनी है और यह सुन्न स्वरूप आद याने सर्व प्रथम का धनी याने मालिक है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ६ ।।

जुग की गत सो ग्यान बिचारा ।। तत्त सुं जीव उपजे हे आई ।।
सुख सो दुख किया नर हाता ।। बिष सोमन उपावे हे ल्याई ।।
कीया सो कर्म बंधे फिर माथे ।। ताहि अधिनता डोले हे आई ।।

सोच बिचार कहे सुखदेवजी ।। जीव स ब्रम्ह नहिं दोय भाई ।। ७ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज इस जगत की गत और ज्ञान बताते है । ये तत्त याने जीव ब्रम्ह से जीव आकर उत्पन्न होते है और जीव ने अपने हाथो से जो कर्म किए उन कर्मो के सुख और दु:ख के फल जीव को यहाँ मिलते है । यह मन जीव मे विषय विकार उत्पन्न करता है । जीव जो-जो कर्म करता है वे-वे सभी कर्म जीव के माथे बाँधे जाते है व उन कर्मो के वश होकर कर्मो के भोग भोगने के लिए जीव सभी जगह डोलते रहता है।(घूमते रहता है)। आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज विचार करके कहते है, कि यह जीव ब्रम्ह से आये हुये जीव और जीव ब्रम्ह कोई दो नही है ।।। ७ ।।

श्लोक ।।

निरलेप निरदोष निर्धार देवा ।। तां मांहि अंछया उतपत भेवा ।।
त बोल ओऊँस सोऊं ऊंचारे ।। कहे सुख बिस्वरूपत देव धारे ।। १ ।।

वह देव निर्लेप,निर्दोष और निराधार है उसमे से इच्छा उत्पन्न हुयी । उस इच्छा से ओअम् और सोहम् बोलकर उच्चारण किया और विश्वरूप उस देवने धारण किया ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १ ।।

तां नाभ कंवळा ब्रम्हा प्रकासे ।। सिव दुज भृगुटी ताहाँ होय भ्यासे ।।
आकास पवना तेजोस तोया ।। कहे सुख पेली ये तत्त जोया ।। २ ।।

उनकी नाभी से कमल और कमल के अन्दर से ब्रम्हा निकला । उस ब्रम्हा की भृगुटी से महादेव निकला । आकाश,वायु,अग्नी,जल ये तत्व पहले बने ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। २ ।।

धर तत्त पेली देह तन कीया ।। नर नार बेरा आकार दीया ।।
इंड खाण आंकूर जर खाण हे तो ।। के सुख यां होय कर पंथ बेतो ।। ३ ।।

पृथ्वी तत्व उत्पन्न करके जीव का शरीर बनाया और स्त्री-पुरूषो का अलग अलग आकार बनाकर स्त्री-पुरूष उत्पन्न करने का भेद बता दिया । चार खानी,अंडज,अंकुर(वृक्ष वनस्पती) और जरायुज(जाले से उत्पन्न होनेवाले मनुष्य,पशु वगैरे) बनाये इस प्रकार से यह रास्ता बहता किया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।। ३ ।।

बोहो जीव केता बिन पार होई ।। लख जात ब्यासी दोयस जोई ।।
ब्यावो न चावो नामो न मेला ।। के सुख यू जीव सब जात भेला ।। ४ ।।

पार नही आते इतने बहुत से जीव बनाये । उनकी चौरासी लाख योनियाँ बनाई । पहले जीवो की शादी नही होती थी और कोई जीवोको शादी करनेकी चाव भी नही थी । जीवो का नाम भी नही रखा था और जीवो का अपना-अपना मेल भी नही था इस प्रकार से सभी जाती के जीव एक जगह एक दूसरो मे मिले हुए थे ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।।४।।

हुकमो न हासल ना ग्यान कोई ।। देवो न सोभा प्रब्रम्ह लोई ।।
तब सोच ब्रम्हा अवतार धारे ।। के सुखकरणी किसब उचारे ।। ५ ।।

किसी का हुक्म भी किसी के उपर नही चलता था । मतलब हुक्म चलाने वाला राजा नही था और हासल याने सरकारी कर वगैरे कुछ भी नही था । कोई किसी की मजूरी वैगरे काम भी नही करते थे और आज के समान संसार का किसी भी प्रकार का ज्ञान भी नही था । उस समय कोई जीवो का देव भी नही था और जीवोमे शोभा(महिमा बडाई)भी नही थी । लोग परब्रम्ह को भी जानते नही थे तब ब्रम्हा ने विचार करके अवतार धारण किया और ब्रम्हा ने अनेक करनीयाँ और हुनर उच्चारण करके जीवो को बताया । ।। ५ ।।

सेंस अठयांसी सुत जन जाया ।। जे जुग ग्यानो देण न आया ।।
तब सोच ब्रम्हा बहु भाँति कियो ।। के सुखदेव जब सिव ग्यान दीयो ।।६ ।।

ब्रम्हा ने अठ्ठासी हजार ऋषी पुत्र जन्म देकर पैदा किये । वे अठ्ठासी हजार ऋषी जगत को ज्ञान देने के लिए आये फिर ब्रम्हा ने बहुत तरह के सोच विचार किये तब महादेव ने ज्ञान दिया । ।। ६ ।।

धर देह मानव जुग माह चालो ।। सब जीव घेरी बिध ठोल घालो ।।
ध्यानो स ग्यानो सबे बेत कीजे ।। के सुखदेवजी सब जीव रीजे ।। ७ ।।

महादेव ने ब्रम्हा से कहा,कि मनुष्य देह धारण करके संसार मे चलो और सारे जगत को घेर कर ये सब विधीयाँ समजाओ । अनेक तरह के ज्ञान,अनेक तरहके ध्यान,अनेक विधी का बेत विचार करो । सभी जीव रीझ जायेगे ऐसा बेत विचार बनाओ । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ७ ।।

तब दुज सिव साम बिध बैत कीया ।। दिस चार जोधा अवतार लीया ।।
बोहो पूंच भारी बळवंत होई ।। के सुख सब जीव गेहे पास लोई ।। ८ ।।

तब ब्रम्हा,महादेव और विष्णू ने अनेक विधी का विचार बनाया और चारो दिशाओ मे चार योद्धे पराक्रमी अवतार लिए । वे चारो योद्धे बहुत पहुँचवाले भारी बलवान हुए । उन्होने सभी याने सभी लोगो को फासे मे पकड लिया ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ८ ।।

प्रथम किरखो दे ब्यार सारो ।। संज सूत आवध गेहे कूट मारो ।।
हुकमो न हासल निस दिन कीया ।। के सुख अवतार काशब लीया ।। ९ ।।

उन्होने जीवो को पहले खेती का काम और सब व्यवहार दिया राजा और राजपुत्र बनाये । और राजा और राजपुत्र को शस्त्र धारण करनेका सिखाया । इस शस्त्र से सज्ज होकर हासल नही देते ऐसे जीवोको पकड्कर मार ठोक करनेका सिखाया । राजा और राजपुत्र जीवो पे रात-दिन हुक्म चलाने लगे । पहले हासल(कर,लगान)ये कुछ नही थे राजा और राजपुत्र हासल जीवो पर लादने लगे। ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले। ।।९।।

तब राज रीतां घोडाज हाथी ।। सुख सेज अंवस बोहो जोध साथी ।।
ऊंवा च्यार वरण गेहे जात पाडी ।। के सुख खूमा छत्तीस बाड़ी ।। १० ।।

फिर मरीची के घर कश्यप राजा हुआ वह हाथी घोडे उपयोग मे लेने लगा । सुख सेज (पलंग, गादी,तकीया,ओढना,बिछाना),अबंस(पालकी,म्यान,अंबारी)और बहुत से योद्धे साथ मे रखने लगा और उसने चार वर्ण अलग-अलग बनाकर उनकी अलग-अलग जाती बनाई । उसमे से छत्तीस कोम बनाये । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।१०।।

सब लोक कस्बा बहु भांत सारा ।। भिन भिन आपो दिया विचारा ।।
तब जिव किस बो बोह बुध आई ।। के सुख या बिध टोल लगाई ।। ११ ।।

सभी लोगो का अनेक प्रकार के हुन्नर बताये । भिन्न भिन्न तरह का मै कौन हूँ इसका विचार दिया तब जीवो को अपने हुनर की बहुत बुद्धि आयी । इस तरह से अलग-अलग टोलियाँ बनायी । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ११ ।।

सब जीव हासल देह बुवारा खेवे ।। देहे वो न मेहेमा नामो ना लेवे ।।
तब सोच मन माहिं या बिध धारी ।। के सुख ब्रम्ह हर आवो मुरारी ।।१२।।

सभी जीव हासल(कर)देने लगे और अपना-अपना सारा व्यवहार चलाने लगे । कोई किसी देव की महिमा या नाम नही लेते थे तब ब्रम्हा,विष्णु,महादेव को फिक्र हुयी व फिकीर करते विचार किया और मन मे यह विधी धारण की । और ब्रम्हा ने महादेव और विष्णू तुम आओ ऐसा कहा । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।१२।

तब ग्यान बाणी मुख च्यार बोल्या ।। आदो न अंतो सब ताक खोल्या ।।
चहुँ फेर लोई सबे चाल आवे ।। के सुख बिध ग्यान सब धार जावे ।।१३।।

और ब्रम्हा अपने चारो मुखँ से वाणी बोलने लगा और वेद का ज्ञान बताने लगा और वेदो मे का आदी से लेकर अन्त तक का सारा ज्ञान खोल दिया । उस ब्रम्हा के चारो तरफ से लोग चलकर आने लगे और ब्रम्हा का ज्ञान सभी धारण करके जाने लगे । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है । ।। १३ ।।

पुरबो ज मुखं रूगबेद बोले ।। यजुरोज दिखण बिध ताक खोले ।।
उत्तरो अथर्वणा पिछमो ज सामा ।। के सुख निगमो अे च्यार धामा ।।१४।।

ब्रम्हा अपने पूरब के मुखँ से ऋगवेद और दक्षिण के मुँख से यजुर्वेद बोला उसमे अलग अलग विधी के रहस्य खोले । उत्तर के मुँख से अथर्व वेद और पश्चिम के मुँख से सामवेद बोला इसतरह से निगम यान जीवोको मालुम नही ऐसे चारो वेद बोले । । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।१४ ।।

सेवा ज पूजा पुन बिध पापं ।। ग्यानो से ध्यानो ब्रम्हो स जापं ।।
करणी स क्रिया सब नाम भाषे ।। के सुख सब सीस प्रब्रम्ह राखे ।। १५ ।।

ब्रम्हा ने सभी लोगो को ब्रम्हा की भक्ती,ब्रम्हा की पुजा करना सिखाया । उसके पुण्य बताये । ब्रम्हा की भक्ती व पुजा न करने के पाप बताये तथा पाप कर्म बताया ब्रम्हा का ज्ञान बताया, ध्यान बताया और ब्रम्हा का जाप बताया । करनी व सारी क्रिया तथा सब नाम बोले और इन सबके उपर परब्रम्ह है ऐसा बताया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।१५।।

ध्यानो स ग्यानो सब ताख खोले ।। प्रब्रम्ह भेवा बोहो छाण बोले ।।
गुरदेव धरमो बिध ठाम दाख्या ।। के सुख ध्यानो प्रब्रम्ह भाख्या ।। १६ ।।

ध्यान करने के ज्ञान के सभी रहस्य खोले और परब्रम्ह का भेद बहुत तरह से छान-छान कर विचार करके बोला । गुरू धर्म और गुरू धर्म की विधी और गुरू का स्थान बताया और परब्रम्ह का ध्यान करना बोला । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।१६।।

कण कण सोझी सब नाम दीया ।। आगो न पाछो सुख सोझ लीया ।।
जे हूण बातां बोहो जुग मांही ।। के सुख आगम भाख सुणाई ।। १७ ।।

सब कण-कण शोधकर सब नाम दिये । पीछे का और आगे का सब सुख लेकर बताया । और संसार मे भविष्यमे याने आगे होनेवाली बहुत सी बाते बोल कर बता दी । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १७ ।।

पढ्बो सगुण बो अंछर सारा ।। तां दिन ब्रम्हा सेंग उचारा ।।
सब मंड चींजा सुर लोक लोई ।। के सुख बावण हरफा स जोई ।। १८ ।।

लिखना,सीखना और गुनना ये सभी अक्षर, ब्रम्हा ने एक दिन उच्चारण किए । सारी पृथ्वी और पृथ्वी की चीजे और सुरलोक(देवोके लोकोमे से लोक)यह सब बावन अक्षरो मे,लिख कर समजेगे ऐसे बताये । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।। १८ ।।

गहे च्यार अडतीस अे अंक भाख्या ।। सब मंड चीजा कण सोझ राख्या ।।
जे मुख बोली कहे जीभ बाणी ।। सो सुख बावन मांहि बखाणी ।। १९ ।।

और जीभ पे धर कर बावन अक्षरे बोली । सारी सृष्टि की चीजे कण-कण शोधकर रखी । जो मुँख से बोलकर जीभ से बोला जाता है वह सब बावन अक्षरो मे बताया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १९ ।।

मुगतीस मोखो गत ग्यान भेवा ।। ओऊँ स सोऊँ पद तत्त देवा ।।
जोगोस जिज्ञो भगतीस बिधो ।। के सुख सोझी सब भाख सिधो ।। २० ।।

मुक्ती क्या है मोक्ष क्या है और गती क्या है । इसका ज्ञान व भेद बताया,ओअम् और सोहम् और तत्त देव का भेद बताया । योग व यज्ञ और भक्ती की विधी शोधकर और सब बोलकर सिद्ध कर बतायीा । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।।। २० ।।

सब ग्यान ध्यान गुर सिष भेवा ।। पूजास पाति नामोस लेवा ।।

ताळास कूंची सब ग्यान खोले ।। केहे सुख दु जगं बोहो भाँत बोले ।।२१।।

सभी ज्ञान,सभी ध्यान तथा गुरू और शिष्य का भेद बताया । पूजा पाती,नाम लेना(नाम स्मरण करना)और सभी ज्ञान के तालो की कुंजी बताकर सभी ज्ञान खोलकर बता दिया इस प्रकार से ब्रम्हा बहुत सी बाते बोला । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।२१।।

तब जीव समझि गत गेल लागा ।। बोहो ग्यान भाख्यो तब भ्रम भागा ।।
पशु मन बुधंग सब शिष्ट लोई ।। कहे सुखदेव या बिध दुजस मोई ।।२२।।

तब सभी जीव ब्रम्हा के द्वारा दिए गये ज्ञान मे समझकर,ज्ञान की गत जानकर,ब्रम्हा के बताये हुए रास्ते पर चलने लगे । ब्रम्हा बहुत ज्ञान बोला तब लोगोके भ्रम गये व लोग कहने लगे,कि संसार के लोगो की बुद्धि और मन पशुके जैसी है ऐसा ब्रम्हा से बोले । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।२२।

बरणोज चारूं तां दिन भाखे ।। मुख ग्यान ब्रम्हा षट धर्म राखे ।।
किरियास करणी दे बार बोले ।। तत्त ध्यान सेवा त्रिगुटी ज खोले ।। २३ ।।

तब ब्रम्हा ने उस दिन ब्राम्हण,क्षत्रीय,वैश्य और शुद्र ऐसे चार वर्ण बनाये और ब्रम्हाने छ:दर्शनो का धर्म पालने के लिए,अपने मुँख से ज्ञान बताया,छ: दर्शनोकी क्रिया,करणी कैसे करनी यह बोला और तत्त(ब्रम्ह का)ध्यान और सेवा त्रिगुटी मे खोल दिया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। २३ ।।

सो सुत आये बिध हेत आयो ।। तां सिर अपनो सरूप पेरायो ।।
सब जीव घेरी दुज पास लाया ।। के सुखसुत हेत चरणां लगाया ।। २४ ।।

ब्रम्हा के सभी पुत्र आये तब ब्रम्हा ने जनेऊ,धोती,पुस्तक,वेद,गायत्रीका जाप करना,माला फिराना आदी अपने पुत्रो के हितमे,सभी पुत्रो को पहनाया । तब ८८००० ऋषीयोने संसार के सारे लोगो को घेरा व घेरकर ब्रम्हा के पास लाया । तब ब्रम्हा ने घेर कर लाये गये लोगो को अपने पुत्र ब्राम्हणो के हितके लिए ब्राम्हणो की चरणो मे लगाया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। २४ ।।

दूजोस न्याति कर जोड़ आयो ।। भुजबळ आवध बिध राज पायो ।।
सब राज रीता बिध बैत भाखी ।। के सुख पूजा सरूपो ज राखी ।। २५ ।।

दूसरा क्षत्रीय जो जनेऊ का अधिकारी है वह हाथ जोडकर ब्रम्हा के आगे आया । वह क्षत्रिय अपनी भुजाओके बल से शस्त्र लेकर आया उसे पृथ्वी का राज्य दिया और राज्य करने की विधी बता दी और क्षत्रिय को ब्राम्हण की पूजा करने का कहा और ब्राम्हण को देवता का स्वरूप समझ कर रखने को कहा । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । । ।।२५।।

गेहे च्यार जीवो बोहो ग्यान कीया ।। तत्त भेद स रूपो तां सीस दीया ।।

ये पाँच दीदार हे सत्त भाई ।। के सुख दूजा सब मांड मांहि ।। २६ ।।

इस प्रकार से ब्राम्हण,क्षत्रिय,वैश्य,सुद्र इन चारो जीवो को पकडकर बहुत सा ज्ञान बताया । ब्रम्हाने अपने ब्राम्हण पुत्रो के स्वार्थ के लिए ब्राम्हण लोगो के हित का ज्ञान बनाया ग्रन्थ बनाये । ब्राम्हण यह ब्रम्हस्वरुप है यह तत्त भेद दियाा । इस प्रकार सबसे उपर ब्राम्हण को श्रेष्ठ बना दिया और कहा कि ये पाँच दर्शन सत सच्चे है परंतु सारी पृथ्वी पर द्विज सबसे पूजनीय दर्शन है । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।२६।।

फिर सोझ दरसण ओ दुज भाखे ।। इम्रत रूपो सब जीव चाखे ।।
षट जाग भेवा गुण षट कीया ।। के सुख सब जाग पद येक दीया ।। २७ ।।

ब्रम्हा ने खोजकर दूसरे दर्शनो का उपदेश बोला । यह अमृतरूपी उपदेश सभी जीवोओने चखा । ब्रम्हा ने छःदर्शन का भेद बताया और छःदर्शन के छःगुण बनाये और सभी जगह एक पद दिया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।२७।।

सब ग्यान बातां प्रकाज कावी ।। क जड जीव जगाय या सोभ दीवी ।।
बळवान हूवा पर पख सारा ।। के सुख तब ध्यान ग्यान उचारा ।। २८ ।।

दूसरो के काम के लिए याने परमार्थ के लिए सब ज्ञान बाते बनायी । जीवो को होशियार करके जीवो की शोभा की । सब जीव पक्के होकर बलवान हुए तब जीवोको ध्यान का और ज्ञान का उच्चारण करके बताया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। २८ ।।

तत्त पाँच चीजां सब लोय जाणो ।। तां रूप दीदार षट भेष क्राणो ।।
सिव जाण ब्रम्हा बिसनो ज सांधी ।। के सुख तीनां मरजाद बांधी ।। २९ ।।

इन पाँच तत्वो की चीजे सभी लोग जानो । इन पाच तत्वके रूपको छः दर्शनका भेष कहलाया । इस प्रकार से ब्रम्हा,विष्णु,महादेव ये तीनो ने मर्यादा बाँधी । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। २९ ।।

बिसनोज रूप सुन सरूप देवा ।। तत्त सेव ध्यान गेहे जीव भेवा ।।
यूँ लोय थापी अे ग्यान दीया ।। के सुख तां दिन राहबीर कीया ।। ३० ।।

विष्णू का सुन्न स्वरूपीरुप उसकी तत्त सेवा और ध्यान करने का भेद जीवो ने धारण किया । इस प्रकार से विष्णू का ज्ञान स्थापीत कर रस्ता बहता किया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३० ।।

गुर इष्ट पूजा जुग आद थापी ।। प्रब्रम्ह बंदगी घट ग्यान आपी ।।
षट भेष दीदार ओ मन लीजो ।। प्रब्रम्ह सेवा अेह रात कीजो ।। ३१ ।।

संसार मे सर्व प्रथम गुरू ही इष्ट है गुरू के शिवा दुजा कोई इष्ट नही है ऐसा बताया और गुरू की पूजा स्थापीत की और परब्रम्ह की बंदगी का ज्ञान सबको घट मे ही दिया । छःवो दर्शनो का भेद इस प्रकार से मान लो और परब्रम्ह की सेवा रात दिन करो ऐसा

ज्ञान दिया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३१ ।।

या बिध तिहुँ लोक द्विजो चेताया ।। गुर धरम अपनो ब्रम्ह बताया ।।
या बिध पूजा हम नित कीजो ।। के सुख अे निस पद चित्त दीजो ।। ३२ ।।

इस प्रकार से तीनो लोको को ब्रम्हाने चेताया और अपना याने ब्राम्हण का गुरूधर्म पालने के लिए कहा और ब्राम्हण ही ब्रम्ह है ऐसा बताया । इस तरह से हमारी याने ब्राम्हण की पूजा नित्य करो और रात-दिन ब्रम्ह पद पर चित्त दो यह ज्ञान दिया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३२ ।।

सेवास पूजा टेलो बताई ।। कर नित जोडी को मुख भाई ।।
प्रदिषणा दे पत भाव गहिजे ।। गुर धरम मेरो या बिध लीजे ।। ३३ ।।

ब्राम्हण की सेवा करना,पूजा करना और टहल करना बता दिया । नित्य हाथ जोडकर पैर पडता हूँ ऐसा मुख से ब्राम्हण को कहा करो । ब्राम्हण की प्रदक्षिणा करके पत और भाव धारण करो इस विधीसे मेरा गुरू धर्म लो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३३ ।।

मेरीस सेवा बगथ बिचारो ।। प्रब्रम्ह बंदगी अे निस धारो ।।
मेरास सामी हि तुम हम मांई ।। के सुख या बिध सेवा बताई ।। ३४ ।।

मेरा वेद ग्रन्थ ही मेरा गुरू है ऐसा विचार करो । परब्रम्ह की बंदगी रात दिन धारण करो । मेरा स्वामी,तुम्हारे और मेरे अन्दर सभी मे है ऐसा विचार करो । इस प्रकारसे ब्रम्हा ने लोगो को सेवा करना बताया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।३४।।

गुर धरम सेवा बोहोत बखानो ।। बिसनोज सिव रूपं मम जोड़ जानो ।।
अे देव सेवा नित ऊठ कीजे ।। के सुख पीछे पद चित्त दीजे ।। ३५ ।।

गुरू धर्म और सेवा की बहुत बखान करो । विष्णू और शिवरूप मेरी जोडी यानी मेरे बराबरी के जैसा समझो । इन देवो की सेवा नित्य प्रती करो और बाद मे उनके पद पर चित्त दो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३५ ।।

देह लछ सोभा सब माह सोवे ।। जो तम धारो सो सब होवे ।।
जो कुछ रीतां तन धर चाहो ।। सो सब सेवा हम पूजा पाहो ।। ३६ ।।

देह का लक्षण शोभा सभी मे शोभता है । जैसा तुम कहोगे वह सब हो जायेगा । जो कुछ भी रीती तुम शरीर धारण करके चाहोगे । वह सब सेवा हम ब्राम्हण को पूजने से प्राप्त होती है । ।।३६।।

भावो प्रभावो बोहो भाँत कीजे ।। आतम देवो बोहो सुख दीजे ।।
ज्यूँ हथ करिये सो सब पावो ।। मम पास या बिध सब चल आवो ।। ३७ ।।

भाव,परभाव बहुत तरह से करो और आत्मदेव को बहुत सुख दो । जो तुम हाथो से करोगे वह सब तुम्हे ही मिलेगा । मेरे पास यह विधी है इसलिये तुम सभी मेरे पास चले

आओ ।। ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३७ ।।

लछोस गछो मंत पेम सारा ।। गुर धरम सेवा सरब उचारा ।।
या बिध इष्टो नेमो स राखो ।। के सुख हम तम पद पेम भाखो ।। ३८ ।।

लक्षण गछो( )मत्त व प्रेम यह सब बताया और गुरू का धरम और गुरु की सेवा यह सब उच्चारण की । इस प्रकार से मेरा इष्ट नियम पूर्वक पालो । हमारे पद का तुम्हे प्रेम बताया ।। ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३८ ।।

प्रजावो वाच ।।

तब लोय युं बेण के मुख आसा ।। हो दुज हे शाम रहो मम पासा ।।
तुम बिन ओ भेव कूंण बखाणे ।। सब जीव जडता कुछ नाह जाणे ।।३९।।

संसार के सभी मनुष्य लोग आशावान होकर बोले कि हे ब्रम्हाजी हे स्वामीजी आप हमारे पास ही रहो । आपके अलावा ऐसा यह भेद हमे कौन बतायेगा । हम तो कुछ जानते नही । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।३९।।

तज ध्यान देहि याँ नांहि पावां ।। हे दुज ता दिन को पास जावा ।।

ब्रम्हा ऊवाच ।।

षट रूप थाप्या सो मन जाणो ।। नित नेम भाख्या ग्यान बखाणो ।। ४० ।।

यह हमारा ध्यान और देह छूटकर हम किसके पास रहेगे । तब ब्रम्हा ने कहा,कि ये छ:दर्शनो के छ: रूप मैने स्थापित किया है । वे मेरी जोडीके यानी मेरी बराबरी के है यह मनमे मानो । इसप्रकार से ब्रम्हाने नित्य नियम बोले और ज्ञान बताया । ।। ४० ।।

षट रूप दरसन मै थाप दीया ।। तत्त सेंग सोझी गुण भाव लीया ।।
आकास दर्शन सिन्यास कीया । अंग खाख रंग स्याम दीदार दीया ।।४१।।

ये छ:वो दर्शनो के छ:वो रूप मैने स्थापित कर दिए । सभी तत्व शोधकर तत्व का गुण दर्शन मे रखा । उसका भाव लिया । आकाश दर्शन का सन्यासी बना दिया । सन्यासी के शरीर पर खाक(राख का रंग)देकर आकाश के जैसा काला रंग बनाया । ।। ४१ ।।

धर रूप जोगी गेहे थाप दीनो ।। रंग रूप पीलो आवाह कीनो ।।
जळ रूप तत्त सो सुत हेत दीया । के सुख आभरण बोहो ब्रछ कीया ।४२।

और धरती तत्व के रंग के जैसे योगी का पीला रंग स्थापीत कर दिया । उसके कपडे का रंग पीला बनाया । जल तत्व का रूप सफेद है,मैने यह अपने पुत्र(ब्राम्हण)के हित के लिए, ब्राम्हणका बनाया । इस तरहसे आभरण( )बहुत से वृक्ष बनाया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४२ ।।

तत्त वाय रूप सुण लील भाया ।। ता सीस दर्शन फकिर क्राया ।।
ते जंग तत्त बोहो लाल होई ।। तां रूप जंगम कहे सुख लोई ।। ४३ ।।

वायु तत्व का रंग हरा है उसे सुनो । उस वायु तत्व का रंग का फकीर कहलाया । और अग्नी तत्व का रंग बहुत लाल होता है उस लाल का जंगम है ऐसा लोग कहते है । ऐसा

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।४३।।

पाँच दीदार गेहे सोझ कीया ।। सिर रूप जत्ति धर नाम दीया ।।
थे जस मेरो पद एक गावो ।। कहे दुज लोई सब पास जावो ।। ४४ ।।

यह मैने पाँच तरह के पाँच तत्वो के अनुसार शोधकर दर्शणोके रंग धर दिये सिप्ती रूपी यती, ढुंढया साधू,बाल उखाडने वाले,मुँख पर पट्टी बाँधने वाले,उपवास करनेवाले) स्थापीत कर दिये । उनका नाम यती रख दिया । तुम मेरा यश और मेरे ही एक पद को भजो । ब्रम्हा ने कहा,कि तुम सभी लोग ब्राम्हण के पास जाओ ।। ४४ ।।

दीदार पूजा आ सत होई ।। षट रूपोस आगे सरूपो न कोई ।।
घट ब्रम्ह सेवा सब कोय ध्यावो ।। के दुज मेरो सरूप मनावो ।। ४५ ।।

मेरे दर्शन की पूजा सच्ची है । इन छः दर्शनो से आगे कोई भी स्वरूप नही है । घट मे ही ब्रम्ह है । उसकी सेवा सभी कोई धारण करो । ब्रम्हा ने कहा,कि इस प्रकार से मेरा स्वरूप मनाओ । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४५ ।।

मेरा स घरमो सरूपोज क्रावो ।। पर ब्रम्ह सेवा लै डोर लावो ।।
अे दोय बातां सो जीव राखे ।। कहे ताय सोभा सब देव भाखे ।। ४६ ।।

मेरा धर्म और मेरा स्वरूप परब्रम्हका है ऐसे परब्रम्ह की सेवा मे लव लगाकर डोर लगा दो । ये दो बाते जो जीव रखेगे उनकी सभी शोभा करेगे । ।। ४६ ।।

गूर इष्ट सेवा पून्यो बतायो ।। देह धार ओऊँ गहे मंत्र लायो ।।
ओ धर्म मेरो नित्त नेम राखो ।। कहे दुज परब्रम्ह अे निस भाखो ।। ४७ ।।

ब्रम्हा ने गुरू इष्ट,गुरू सेवा,तथा पुण्य बताया और देह धारण करके ॐ पकडकर मंत्र लाया । यह ॐ गायत्री मंत्र से पहले उच्चारण करते है । ॐ को लेकर मंत्र प्रचारमे लाया है । यह मेरा धर्म याने गायत्री मंत्र(ॐभूर्भूवःस्वःतत्स वितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धियो योनः प्रचोदयात) नित्य नियम पूर्वक रखते जाओ और ब्रम्हा ने परब्रम्ह का भजन रात दिन करो ऐसा कहाँ । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ४७ ।।

दोहा ।।

या बिध दुज धुर पेड़ में ।। कहयो ग्यान समझाय ।।
पार ब्रम्ह मेरा धणी ।। सो तुम हम सब मांय ।। ४८ ।।

इस विधी से ब्रम्हा ने मूल ज्ञान समझाकर बताया । जो पारब्रम्ह है वह मेरा धनी है वह तुम्हारे अन्दर और हमारे अन्दर सभी मे है ।। ४८ ।।

तां रात दिन लागा रहो ।। सिमरो ब्रम्ह बिचार ।।
मम पूजा गुर इष्ट हे ।। तुम हम सब पद पार ।। ४९ ।।

उस पारब्रम्ह से रात दिन लगे रहो और परब्रम्ह का सुमिरन करके उस परब्रम्ह का विचार करो । और भी मेरी पूजा क्या है पूछोगे तो गुरू इष्ट ही मेरी पूजा है । गुरू का पद

तुम्हारे हमारे और सबके पार है ऐसा बताया ।।। ४९ ।।

भाँत भाँत कर बरणियां ।। सबे ग्यान तत्त सोज ।।
तां दिन सुण सुखराम क्हे ।। गेहो सकळ जुग खोज ।। ५० ।।

भांती भांती से वर्णन करके बताया । सब ज्ञानका तत्त सार शोधकर ज्ञान बताया । उस दिन सारे जग ने यह ज्ञान खोज कर पकडा यह सुनो । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ५० ।।

जगत गुरू ब्रम्हा सही ।। तां मे फेर न सार ।।
आद अंत सुखराम क्हे ।। दीयो ग्यान बिचार ।। ५१ ।।

जगत गुरू ब्रम्हा है यह सही है इसमे फेर फार नही है । आदी से लेकर अन्त तक का ज्ञान ब्रम्हा ने ही विचार करके दिया ऐसा ब्रम्हा ने बताया । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ५१ ।।

तां पेली नहिं ऊपना ।। जीव जंत नर कोय ।।
सब जुग सुण सुखराम क्हे ।। ब्रम्हा का सुत होय ।। ५२ ।।

इसमे पहले किसी भी जीव,जंतु या मनुष्यो को ज्ञान उत्पन्न नही हुआ था । ये सब जगत ब्रम्हा के ही सुत(पुत्र)है ।(ब्रम्हा से पहले कोई भी नही बना ।)।।५२।।

सरब ग्यान ब्रम्हा दिया ।। कसर न राखी कोय ।।
आद मूळ सुखराम क्हे ।। युँ ब्रम्हा गुर होय ।। ५३ ।।

सब तरह का ज्ञान ब्रम्हा ने बताया । ज्ञान बताने मे कोई कसर नही रखी । आदी मूल इस तरह से संसार का गुरू ब्रम्हा बना । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।।५३।।

ग्यान ध्यान सब बात सो ।। नाँ नाँ बिध की होय ।।
आद मूळ ब्रम्हा सही ।। पाँच तत्त गुण जोय ।। ५४ ।।

ध्यान ज्ञान और सभी बाते नाना तरह के है । आदमूल ब्रम्हा को ही पाँच तत्व और रजोगुणी ब्रम्हा,सत्वगुणी विष्णू और तमोगुणी महादेव ऐसे तीनो गुण कबूल कर लो । ।। ५४ ।।

ब्रम्हा जुग प्रमोद के ।। दियो बोहोत बिध ग्यान ।।
तम हम सब ही आतमा ।। पाँच तत्त की जान ।। ५५ ।।

ब्रम्हा ने संसार को उपदेश देकर बहुत विधी का ज्ञान बताया । तुम और हम सब आत्मा पाँच तत्व के बने हुए है यह जानो ।। ५५ ।।

पाँच तत्त अे अेकटा ।। बोले प्रगट आय ।।
आतम मे प्रमात्मा ।। सब सुर पोख्या जाय ।। ५६ ।।

ये पाँच तत्व एकत्र होने पर प्रगट रूप से बोलने लगते है । आत्मा मे ही परमात्मा है ।

इसे पोस लिया यानी सब देव पोस लिए जाते ।। ५६ ।।

आतम मे प्रमात्मा ।। मेरा सब असतूल ।।
या मे दोय मां जाण ज्यो ।। जड चेतन क्या थूल ।। ५७ ।।

आत्मा मे ही परमात्मा है व मेरे ही ये सब स्थूल शरीर है इसमे दो मत समझो । जड क्या, चेतन क्या तथा स्थूल क्या यह सब ब्रम्हा का ही स्वरूप है इसमे दूसरा मत जानो । ।।५७।।

श्लोक ।।

जळ तत्त लोही पवनाज सासो ।। धर हाड नेणा गह तेज वासो ।।
आकाश तत्तो देह मध पोलं ।। अे तत्त पांची जुग रूप खोलं ।। ५८ ।।

इस शरीर मे रक्त है वही जल तत्व है । शरीर मे स्वाँस है यही वायु तत्व है । इस शरीर मे हाड है यही पृथ्वी तत्व रहता है और आँखो मे अग्नी तत्व रहता है और इस शरीर मे खोखली जगह है वही आकाश है । यही पाँच तत्व जगत मे है व यही पाँच तत्व शरीर मे है ऐसा ज्ञान खोलकर बताया । ।। ५८ ।।

।। इति मूळ गिनान को अंग संपूरण ।।